स्नातक स्तर के छात्रों में विज्ञान विषय के प्रति बढ़ती अरूचि का अध्ययन

शोभा उपाध्याय*

सारांश

प्रस्तुत शोध में छात्रों के विज्ञान विषय में बढ़ती अरूचि का अध्ययन किया गया है । इस शोध कार्य में विभिन्न सांख्यिकी विधियों का प्रयोग कर विश्लेषण किया गया है उसके पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त किये गये उसका शैक्षिक महत्व के रूप में विस्तृत विवेचना की जा रही है । शैक्षिक अनुसंधान के संबंध में यह शोध नवीनतम एवं उपयोगी है ।

प्रस्तावना

आधुनिक युग विज्ञान का युग है विज्ञान के नवीन अविष्कारों ने विश्व में आज क्रांति सी उत्पन्न कर दी है । विज्ञान की चर्मोन्नति से विश्व एक और संगठित होकर शांति के मंच पर एकत्रित होना चाहता है वही विज्ञान की वरदायिनी शक्ति मनुष्य जीवन को सुखमय और सुरक्षित बनाती जा रही है । आज विज्ञान ने महत्वपूर्ण एवं आश्चर्यजनक प्रगति की है । आज से कुछ वर्ष पूर्व विज्ञान के अविष्कारों की चर्चा की जाती है तो लोग आश्चर्यचकित हो उठते थे परंतु आज ये वस्तुयें मानव के दैनिक उपयेाग की वस्तुएॅ बन गई है । आज के युग में हर उन्नत देश का यह प्रयत्न रहा है कि वह प्रगति के पथ पर बढ़ता चले । प्रगति के पथ पर बढ़ने की आकांक्षा हर उस देश में है, जो उन्नति के चरमोत्कर्ष पर है एवं हर उस देश में जो उन्नति के शीर्ष पर पहुॅचना चाहता है । भारत में विज्ञान शिक्षा का स्तर अन्य प्रगतिशील देशों के विज्ञान शिक्षा के स्तर से कम है क्योंकि बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में द्रुतगति से शिक्षा क्षेत्र में अप्रत्याशित परिवर्तन हुए तथा छात्रों द्वारा हायर सेकेण्डरी स्तर से ही व्यवसायिक पाठ्यक्रम को अपनी रूचि अनुसार चयन किया जाने लगा क्योंकि व्यवसायिक शिक्षा जीविकापार्जन का साधन तो प्रदान करता ही है साथ ही अर्थव्यवस्था के दूसरे क्षेत्रों को भी लाभांवित करता है आज दुनिया के देशों के बीच आर्थिक प्रगति की जो दौड़ हो रही है । उनमें वे राष्ट्र ही सबसे आगे चल रहे है जहॉ पर व्यवसाय यानी कि उद्योग, धंधे, व्यापार एवं सेवाऐं विकसित अवस्था में है जिन देशों का व्यवसाय पिछड़ा हुआ है वे आर्थिक प्रगति की दौड़ में बहुत पिछड़े हुए माने जाते है, यही कारण है कि आज पाठ्यक्रम में व्यवसायिक शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है तथा विज्ञान शिक्षा का स्तर घटता जा रहा है । शीघ्र अतिशीघ्र जीविकापार्जन के साधनों को प्राप्त करने के लिए छात्रों का ध्यान व्यवसायिक शिक्षा की ओर जा रहा है तथा विज्ञान शिक्षा के प्रति छात्रों की रूचि घटती जा रही है।

उद्देश्य

छात्रों की विज्ञान विषय में बढ़ती अरूचि का अध्ययन कर उनकी समस्याओं को ज्ञात करना तथा समस्याओं को ज्ञात कर उसके निराकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

चर

स्वतंत्र चर – छात्रों द्वारा भरवाये गए विज्ञान अभिरूचि परीक्षण प्रपत्र

आश्रित चर – परीक्षण के प्राप्तांक

शोध उपकरण

विज्ञान रूचि परीक्षण (डॉ. एल.एन दुबे एवं अर्चना दुबे द्वारा निर्मित)

परिकल्पना

''कला एवं वाणिज्य संकाय के छात्रों में विज्ञान विषय के प्रति अरूचि में कोई सार्थक अंतर नही होता।''

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए सामान्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

*सहायक प्राध्यापक, हितकारिणी प्रशिक्षण महिला महाविद्यालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश)

शोध योजना एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के लिए जबलपुर शहर के 5 महाविद्यालयों का चयन कर उसमें से न्यादर्श के रूप में 25 कला तथा 25 वाणिज्य के छात्रों का चयन किया गया है जिन्होंने स्नातक स्तर पर विज्ञान विषय को छोड़ दिया तथा कला और वाणिज्य में प्रवेश ले लिया ।

तालिका क्रं. 1

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अंतर	क्रांतिक अनुपात
छात्र कला (संकाय)	25	35.36	7.03	3.68	1.62
छात्र वाणिज्य (संकाय)	25	39.04	8.9		

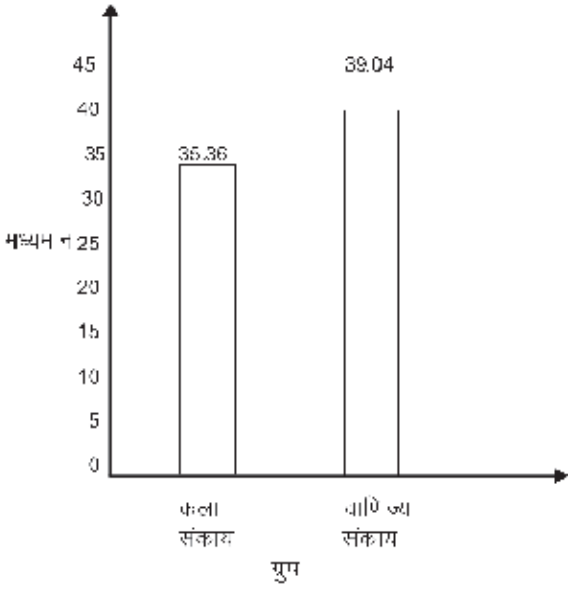

परिणामों का विश्लेषण

उपरोक्त तालिका से निष्कर्ष निकलता है कि कला संकाय के छात्रों का विज्ञान विषय के प्रति अरूचि का मध्यमान 35.36 व वाणिज्य संकाय के छात्रों के अरूचि का मध्यमान 39.04 है । मानक विचलन 7.03 व 8.9 है व मध्यमानों का अंतर 3.68 है तथा क्रांतिक अनुपात का मान 1.62 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 के मान 1.98 से कम है । इससे प्रमाणित होता है कि कला संकाय तथा वाणिज्य संकाय के छात्रों में विज्ञान विषय के प्रति अरूचि में सार्थक अंतर नही है ।

शैक्षिक महत्व

कहा जाता है कि ''आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है।'' मनुष्य ने अपनी आवश्यकतानुसार अनेक अविष्कार किये है जो विज्ञान की देन है । वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है परंतु वर्तमान समय में यह दुर्भाग्य की बात है कि विज्ञान शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की रूचि घटती जा रही है क्योंकि उनका ध्यान शीघ्र अतिशीघ्र जीविकापार्जन के साधनों को प्राप्त करने में लगा रहता है, इसलिये आज वे व्यवसायिक शिक्षा को अधिक महत्व दे रहे है । इस लघु शोध के द्वारा शोधकर्ती ने उन कारणों को उजागर किया है जिससे विज्ञान में अरूचि बढ़ रही है तथा उन सुझावों को बताया है जिसके द्वारा विद्यार्थियों का ध्यान विज्ञान की ओर पुनः आकर्षित किया जा सकता है । क्योंकि इस वैज्ञानिक युग में किसी देश की उन्नति का मूल्याकंन उस देश की वैज्ञानिक प्रगति से आंका जाता है ।

शिक्षा की प्रक्रिया समय और आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बदली जानी चाहिए जब तक विश्व प्राणवान रहेगा शिक्षा प्रक्रिया को चलायमान रखना आवश्यक है ।

संदर्भ ग्रंथ

शर्मा, डॉ. आर.ए., भारत में शैक्षिक व्यवस्था का विकास, राधा प्रकाशन, आगरा ।

सिंह, डॉत्र रामपाल एवं शर्मा, डॉ.ओ.पी., शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा ।

वर्मा, डॉ. श्रीमती प्रीति एवं श्रीवास्तव, डॉत्र डी.एन., मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा ।

बाजपेयी, डॉ. सुरेशचंद्र, निबंध सौरभ, अर्चना पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ।

घोष, श्री शंकर, यूनिक सामान्य अध्ययन, इलाहाबाद पब्लिकेशन्स ।

गुप्ता, श्रीमती सीमा एवं देशपांडे डॉ. सुनील Research Link-59 Vol.-VII (12) Feb. 2009

बाकलीवाल, डॉ. ममता एवं अग्रवाल, श्रीमती रंजना Research Link-62 Vol.-VIII (3) May 2009